ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

ख़ानदानी झगड़ों

के असबाब और उनका हल

(छठा हिस्सा)

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	**ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल (छठा हिस्सा)**
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	जून 2002
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल

(छठा हिस्सा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

पिछले कई हफ़्तों से ख़ानदानी झगड़ों के मुख़्तलिफ़ असबाब का बयान चल रहा है। उन असबाब में से एक सबब वह है जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस हदीस में बयान फ़रमाया है, वह हदीस यह है कि:

यह बड़ी ख़ियानत है

हज़रत सुफ़ियान बिन उसैद हज़रमी रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उन्होंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

كَبُرَتْ خِيَانَةً اَنْ تُحَدِّثَ أَخَاكَ حَدِيْثًا هُوَلَكَ بِهٖ مُصَدِّقٌ وَاَنْتَ لَهٗ بِهٖ كَاذِبٌ

(ابوداؤد شریف)

यह बड़ी ही ख़ियानत की बात है कि तुम अपने भाई को कोई ऐसी बात सुनाओ जिसको वह समझ रहा हो कि तुम उसको सच्ची बात बता रहे हो लेकिन हक़ीक़त में तुम उसके सामने झूठ बोल रहे हो।

यह वह अ़मल है जिस से दिलों में दरारें पड़ जाती हैं। दिल फट जाते हैं, और दुश्मनियां पैदा हो जाती हैं। झूठ बोलना तो हर हाल में बड़ा ज़बरदस्त गुनाह है, लेकिन इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ास तौर पर उस झूठ को बयान फ़रमा रहे हैं जहां तुम्हारा मुख़ातब तुम पर एतिमाद कर रहा है, और वह यह समझ रहा है कि यह शख़्स जो बात मुझ से कहेगा वह सीधी और सच्ची बात कहेगा, लेकिन तुम उल्टा उसके एतिमाद को ज़ख़्मी करते हुए उसके साथ झूठ बोलो, तो इस अ़मल में झूठ का गुनाह तो है ही, साथ ही इसमें ख़ियानत का भी गुनाह है।

वह अमानतदार है

इसलिए कि जो शख़्स तुम से रुजू कर रहा है, वह तुम्हें अमनतदार और सच्चा समझ कर रुजू कर रहा है। हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

المستشار مؤتمن۔

यानी जिस शख़्स से मश्विरा तलब किया जाए वह अमानतदार होता है।

गोया कि मश्विरा तलब करने वाला उसके पास अमानत रखवाए हुए है कि तुम सही बात मुझे बताना, और उस पर एतिमाद और भरोसा भी कर रहा है, लेकिन तुमने उसके साथ झूठ बोला और ग़लत बात बताई, इसलिए तुम ख़ियानत के गुनाह के करने वाले भी हुए।

झूठा मैडिकल प्रमाण पत्र

आज हमारे समाज में जितनी तस्दीक़ात और सर्टीफ़िकिट जारी होते हैं, वे सब इस हदीस के तहत आते हैं। जैसे एक शख़्स बीमार है और उसको अपने महकमे से छुट्टी लेने के लिए यह ज़रूरी है कि वह इस बात का मैडिकल सर्टीफ़िकिट पेश करे कि वह वाक़ई बीमार है तो अब जिस डॉक्टर से सरर्टीफ़िकिट तलब किया जायेगा वह अमानतदार है, क्योंकि वह महकमा उस डॉक्टर पर भरोसा और एतिमाद कर रहा है कि यह जो सर्टीफ़िकिट जारी करेगा, वह सच्चा सर्टीफ़िकिट जारी करेगा। वह शख़्स वाक़ई बीमार होगा तब ही सर्टीफ़िकिट जारी क़रेगा वर्ना जारी नहीं करेगा। अब अगर वह डॉक्टर पैसे लेकर या पैसे लिए बग़ैर सिर्फ़ दोस्ती की बिना पर इस ख़्याल से कि इस सर्टीफ़िकिट के ज़रिए इसको छुट्टी मिल जाए, झूठा सर्टीफ़िकिट जारी कर देगा तो यह डॉक्टर झूठ के गुनाह के साथ बड़ी ख़ियानत का भी मुजिरम होगा। और जो शख़्स ऐसा सर्टीफ़िकिट जारी कर दे, ऐसा शख़्स बेशुमार गुनाहों

का इर्तिकाब कर रहा है। एक यह कि ख़ुद झूठ बोल रहा है और दूसरे यह कि डॉक्टर को झूठ बोलने पर मजबूर कर रहा है। और अगर पैसे देकर यह सर्टीफ़िकिट हासिल कर रहा है तो रिश्वत देने के गुनाह का मुज्रिम हो रहा है, और फिर झूठ बोल कर जो छुट्टी ले रहा है वह छुट्टी भी हराम है और उस छुट्टी की जो तन्ख़्वाह ली है वह तन्ख़्वाह भी हराम है, और उस तन्ख़्वाह से जो खाना खाया वह भी हराम है। इसलिए एक झूठा मैडिकल सर्टीफ़िकिट जारी कराने में इतने बेशुमार गुनाह जमा हैं। अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

आज हमारा समाज इन चीज़ों से भरा हुआ है, अच्छे ख़ासे पढ़े लिखे, दीनदार, नमाज़ी, शरीअ़त के पाबन्द लोगों को भी जब ज़रूरत पड़ती है तो वे भी झूठा सर्टीफ़िकिट निकलवाने में कोई शर्म और आ़र महसूस नहीं करते, और इस चीज़ को दीन से ख़ारिज ही कर दिया है।

मदरसों की तस्दीक़ करना

इसी तरह मदरसों की तस्दीक़ है, बहुत से मदारिस के हज़रात मेरे पास भी आते हैं कि आप हमारे मदरसे की तस्दीक़ कर दीजिए कि यह मदरसा क़ायम है और ठीक काम कर रहा है, अगर इसमें चन्दा दिया जायेगा तो वह चन्दा सही जगह में इस्तेमाल होगा। यह तस्दीक़ एक गवाही है। अब अगर किसी शख़्स ने यह कहा कि फ़लां से तस्दीक़ कराकर लाओ, तब हम तुम्हें चन्दा देंगे, गोया कि उसने मुझ पर भरोसा किया, अब मेरा यह फ़र्ज़ है कि मैं

उस वक़्त तक तस्दीक़ जारी न करूं जब तक मुझे हक़ीक़त में इस बात का यक़ीन न हो कि वाक़ई यह मदरसा इस चन्दे का मुस्तहिक़ है। अगर एक शख़्स मेरे पास आए और मैं सिर्फ़ दोस्ती या मरव्वत में आकर तस्दीक़ कर दूं तो इसका मतलब यह होगा कि लोग तो मेरे ऊपर भरोसा कर रहे हैं और मैं उनके साथ झूठ बोल रहा हूं, क्योंकि मैंने उस मदरसे को देखा नहीं, मैं उसके हालात से वाक़िफ़ नहीं, उसके काम करने के तरीक़े से मैं बाख़बर नहीं, लेकिन इसके बावजूद मैंने तस्दीक़ नामा जारी कर दिया, तो मैं इस बदतरीन ख़ियानत का करने वाला हूंगा। अब मदरसे के हज़रात तस्दीक़ के लिए मेरे पास आते हैं, जब मैं उनसे माज़िरत करता हूं तो कहते हैं कि उनसे इतना छोटा सा काम नहीं किया जाता। वे समझते हैं कि इन्कार करना मरव्वत के ख़िलाफ़ है, हालांकि हक़ीक़त में यह शहादत और गवाही है, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह बदतरीन ख़ियानत है कि लोग तुम पर भरोसा करके तुम्हें सच्चा समझ रहे हैं और तुम उनके सामने झूठ बोल रहे हो।

झूठा कैरेक्ट्र सर्टीफ़िकिट

आजकल कैरेक्ट्र सर्टीफ़िकिट बनवाए जाते हैं, और सर्टीफ़िकिट जारी करने वाला उसमें लिखता है कि मैं इस शख़्स को पांच साल से जानता हूं या दस साल से जानता हूं, हालांकि वह उसको सिर्फ़ दो दिन से जानता है, मैं

इसके हालात से वाक़िफ़ हूं, यह बहुत अच्छे अख़्लाक़ और क़िरदार का मालिक है। अब सर्टीफ़िकिट जारी करने वाला यह समझ रहा है कि मैं इस शख़्स के साथ भलाई कर रहा हूं, लेकिन उसको यह मालूम नहीं कि उस भलाई के नतीजे में क़ियामत के दिन गर्दन पकड़ी जायेगी कि तुमने तो यह लिखा था कि मैं इसको पांच साल से या दस साल से जानता हूं, हालांकि तुम इसको नहीं जानते थे। यह बदतरीन ख़ियानत के अन्दर दाख़िल है, क्योंकि लोग तुम पर भरोसा कर रहे हैं, और तुम लोगों के साथ झूठ बोल रहे हो।

आज सर्टीफ़िकिट की कोई क़ीमत नहीं

आज समाज इन बातों से भर गया है, इसका नतीजा यह है कि आज सर्टीफ़िकिट की भी कोई क़ीमत नहीं रही, क्योंकि लोग जानते हैं कि ये सब झूठे और बनावटी सर्टीफ़िकिट हैं। आज हमने सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इन इर्शादात को ज़िन्दगी से ख़ारिज ही कर दिया है, और सिर्फ़ नमाज़ रोज़े और तस्बीह का नाम दीन रख दिया है, लेकिन दुनिया की ज़िन्दगी में हम लोगों के साथ किस तरह पेश आ रहे हैं, इस तरफ़ ध्यान ही नहीं है।

यह भी इख़्तिलाफ़ात का सबब है

यह चीज़ भी हमारे आपस के इख़्तिलाफ़ात और झगड़ों के असबाब में से एक सबब है। इसलिए कि जब तुम एक

आदमी पर भरोसा और एतिमाद कर रहे हो कि यह शख़्स तुम्हें सच बात बतायेगा, लेकिन वह शख़्स तुम से झूठ बोले, तो उस झूठ के नतीजे में उसके दिल में तुम्हारे ख़िलाफ़ गिरह पड़ जायेगी कि मैंने तो इस पर भरोसा किया, लेकिन उसने मेरे साथ झूठ बोला, मुझे धोखा दिया और मुझे ग़लत रास्ता दिखाया, इसलिए उसके दिल में तुम्हारे ख़िलाफ़ बैर और दुश्मनी पैदा होगी।

बहर हाल! आपसी इख़्तिलाफ़ात और ना इत्तिफ़ाक़ी का एक बहुत बड़ा सबब "झूठ" है। अगर इस झूठ को ख़त्म नहीं करोगे तो आपस के झगड़े और इख़्तिलाफ़ात कैसे ख़त्म होंगे? इसलिए इस झूठ को ख़त्म करो। वैसे तो हर झूठ हराम है, लेकिन ख़ास तौर पर वह झूठ जहां पर दूसरा शख़्स तुम पर भरोसा कर रहा हो और तुम उसके साथ झूठ बोलो, यह ख़तरनाक झूठ है।

जो गुज़र चुका उसकी तलाफ़ी कैसे करें?

अब एक सवाल ज़ेहनों में यह पैदा होता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आपस के इख़्तिलाफ़ात और ना इत्तिफ़ाक़ी के जो असबाब बयान फ़रमाए हैं, अगर हम आज उनसे परहेज़ करने का इरादा कर लें और मेहनत करके अपने आपको इसका पाबन्द बना लें तो इन्शा अल्लाह आईन्दा की ज़िन्दगी तो दुरुस्त हो जायेगी, लेकिन जो ज़िन्दगी पहले गुज़र चुकी उसमें अब तक हम से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इन तालीमात की ख़िलाफ़ वर्ज़ी हुई, जैसे किसी की ग़ीबत

कर ली, किसी को बुरा कहा, किसी को दुख पहुंचाया, किसी को तक्लीफ़ पहुंचाई, किसी का दिल दुखाया, और इन ख़िलाफ़ वर्ज़ियों के नतीजे में और बन्दों के हुकूक़ को ज़ाया करने के नतीजे में हमारा आमाल नामा स्याह हो गया है, इसका क्या हल है? अगर हम अपनी पिछली ज़िन्दगी की तरफ़ नज़र दौड़ाएं तो यह नज़र आयेगा कि ज़िन्दगी के गुज़रे हुए सालों में न जाने कितने इन्सानों से राबता हुआ, कितने इन्सानों से ताल्लुक़ात हुए, हमने किसकी कितनी हक़ तल्फ़ी की? इसका हमारे पास न कोई हिसाब है, न पैमाना है और न उनसे माफ़ी मांगने की कोई सूरत है। इसलिए अगर हम आज से अपनी इस्लाह शुरू कर भी दें तो पिछले मामलों का और पिछली ज़िन्दगी का क्या बनेगा? और पिछला हिसाब किताब साफ़ करने का क्या रास्ता है? यह बड़ा अहम सवाल है और हम सब को इसकी फ़िक्र करने की ज़रूरत है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का माफ़ी मांगना

लेकिन नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर कुरबान जाइए कि आपने हमारी हर मुश्किल का हल अपनी ज़िन्दगी के पाक नमूने में तज्वीज़ फ़रमा दिया है। जो आदमी अपनी पिछली ज़िन्दगी की इस्लाह करना चाहता हो, और उसको ख़्याल हो कि मैंने बहुत से अल्लाह के बन्दों के हुकूक़ ज़ाया कर दिए हैं, तो इसका रास्ता भी नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताया और ख़ुद इस पर इस तरह अ़मल करके दिखा दिया कि एक

दिन आपने मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम में खड़े होकर आ़म सहाबा के मजमे के सामने फ़रमायाः

मेरी ज़ात से कभी किसी इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुंची हो, या कभी मुझ से कोई ज़्यादती हुई हो, तो मैं आज अपने आपको उसके सामने पेश करता हूं। अगर वह उस ज़्यादती का बदला लेना चाहता है तो मैं बदला देने को तैयार हूं। और अगर वह मुझ से कोई सिला तलब करना चाहता है तो मैं वह देने के लिए तैयार हूं। और अगर वह माफ़ करना चाहता है तो मेरी दरख़्वास्त है कि वह माफ़ कर दे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बुलन्द मक़ाम

यह ऐलान उस ज़ात ने फ़रमाया जिसके बारे में कुरआने करीम ने फ़रमा दिया किः

لِيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ (سورة فتح: آيت٢)

ताकि अल्लाह तआ़ला आपकी सब अगली पिछली ख़ताएं माफ़ फ़रमा दे।

और जिनके बारे में यह फ़रमा दियाः

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا (سورة النساء: آيت ٦٥)

यानी परवर्दिगार की क़सम! लोग उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकते जब तक वे अपने आपसी इख़्तिलाफ़ात में आपको फ़ैसला करने वाला न बनाएं, और फिर जो कुछ आप फ़ैसला करें उसके बारे में वे अपने दिल

में कोई तंगी महसूस न करें और उसको मानने के लिए उसके आगे अपना सर न झुका लें।

इसलिए जिस ज़ात के बारे में कुरआने करीम में ये इर्शादात नाज़िल हुए हों, और जिनके बारे में इस बात की वज़ाहत आ गई हो कि आपकी ज़ात से किसी को ज़ुल्म और ज़्यादती पहुंच सकती ही नहीं, इन सब बातों के बावजूद आपने मस्जिदे नबवी में खड़े होकर तमाम सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के सामने वह ऐलान फ़रमाया जो ऊपर दर्ज हुआ।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु का बदले के लिए आना

रिवायतों में आता है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह ऐलान सुनकर एक सहाबी खड़े हो गए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं बदला लेना चाहता हूं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूछा कि कैसा बदला? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि एक बार आपने मेरी कमर पर मारा था, मैं उसका बदला लेना चाहता हूं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे तो मारना याद नहीं है, लेकिन अगर तुम्हें याद है तो आ जाओ और बदला ले लो। चुनांचे वह सहाबी कमर के पीछे आए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! जिस वक़्त आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझे मारा था उस वक़्त मेरी कमर पर कपड़ा नहीं था, बल्कि मेरी

कमर नंगी थी। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी चादर कमर से हटा दी, तो नुबुव्वत की मुहर नज़र आने लगी। वह सहाबी आगे बढ़े और नुबुव्वत की मुहर को बोसा दिया और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैंने नुबुव्वत की मुहर को बोसा देने के लिए यह बहाना इख़्तियार किया था। बहर हाल! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने आपको पेश कर दिया कि जो बदला लेना चाहे तो मैं उसको बदला देने के लिए तैयार हूं।

सब से माफ़ी तलाफ़ी करा लो

इस अ़मल के ज़रिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उम्मत को सिखा दिया कि जब मैं यह अ़मल कर रहा हूं तो तुम भी अगर अपनी पिछली ज़िन्दगी के दाग़ धोना चाहते हो तो अपने मिलने जुलने वालों, अपने अ़ज़ीज़ों और रिश्तेदारों और अपने दोस्त अहबाब से यही पेशकश करो कि न जाने पिछली ज़िन्दगी में मुझ से आपकी क्या हक़ तल्फ़ी हुई हो, आज मैं उसका बदला देने को तैयार हूं। और अगर आप माफ़ कर दें तो आपकी मेहरबानी।

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का माफ़ी मांगना

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने ख़ास तौर पर एक रिसाला इस मौज़ू पर लिखा और उस रिसाले को शाया किया और फिर अपने तमाम मिलने जुलने वालों में वह रिसाला

तक़सीम किया। उस रिसाले का नमा है "अल उज़्र वन्नुज़्र" उस रिसाले में यही मज़मून लिखा कि चूंकि मेरे बहुत से लोगों से ताल्लुक़ात रहे हैं, न जाने मुझ पर किसका हक़ हो और वह हक़ मुझ से ज़ाया हो गया हो, या मुझ से कोई ज़्यादती हुई हो, आज मैं अपने आपको पेश करता हूं। अगर मुझ से उस हक़ का बदला लेना चाहता है तो बदला ले ले, अगर कोई माली हक़ मेरे ज़िम्मे वाजिब है वह मुझे माली हक़ याद दिला दे, मैं बदला दे दूंगा। या किसी को जानी तक्लीफ़ पहुंचाई है तो मैं उसका बदला देने को तैयार हूं, वर्ना मैं माफ़ी की दरख़्वास्त पेश करता हूं। और साथ में यह हदीस भी लिख दी कि:

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर कोई मुसलमान दूसरे मुसलमान से सच्चे दिल से माफ़ी मांगता है कि मुझे माफ़ कर दीजिए, मुझ से ग़लती हो गई, तो दूसरे मुसलमान भाई का फ़रीज़ा है कि उसको माफ़ कर दे। अगर वह माफ़ नहीं करेगा तो वह आख़िरत में अल्लाह तबारक व तआ़ला से माफ़ी की उम्मीद न रखे।

रुपये पैसे का मामला अलग है। अगर दूसरे के ज़िम्मे रुपये पैसे वाजिब हैं तो उसको हक़ है कि उसको वुसूल कर ले। लेकिन दूसरे क़िस्म के हुक़ूक़, जैसे किसी की ग़ीबत कर ली थी, या दिल दुखाया दिया था, या कोई और तक्लीफ़ पहुंचाई थी, और तक्लीफ़ पहुंचाने वाला अब माफ़ी मांग रहा है तो दूसरे मुसलमान को चाहिए कि वह माफ़

कर दे।

हज़रत मुफ़्ती साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का माफ़ी मांगना

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने वफ़ात से तीन साल पहले जब पहली बार दिल का दौरा पड़ा, तो अस्पताल ही में मुझे बुलाकर फ़रमाया कि तुम मेरी तरफ़ से ऐसा ही एक मज़मून लिख दो जैसे हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने "अल उज़्र वन्नुज़्र" में अपने से ताल्लुक़ रखने वालों को लिखा था, और उसका नाम यह रखना "कुछ तलाफ़ी–ए–माफ़ात" उसमें लफ़्ज़ "कुछ" से इस तरफ़ इशारा फ़रमाया कि उसके ज़रिए यह दावा नहीं है कि मैं अपने पिछले सारे मामलों की तलाफ़ी कर रहा हूं, बल्कि यह "कुछ" तलाफ़ी कर रहा हूं। यह मज़मून लिखवाने के बाद शाया फ़रमाया, और अपने तमाम ताल्लुक़ रखने वालों को ख़त के ज़रिए भेजा ताकि उनकी तरफ़ से माफ़ी हो जाए।

अपना कहा सुना माफ़ करा लो

हमारे बुज़ुर्गों ने एक जुम्ला सिखाया है जो अक्सर व बेश्तर लोगों की ज़बान पर होता है, यह बड़ा अच्छा जुम्ला है। वह यह कि जब किसी से जुदा होते हैं तो उस से कहते हैं कि:

"भाई! हमारा कहा सुना माफ़ कर देना"।

यह बड़ा काम का जुम्ला है और इसमें बड़ी अ़ज़ीम हिक्मत की बात है। अगरचे लोग इसको बग़ैर सोचे समझे कह लेते हैं, लेकिन हक़ीक़त में इस जुम्ले में इसी तरफ़ इशारा है कि इस वक़्त हम तुम से जुदा हो रहे हैं, अब दोबारा मालूम नहीं कि मुलाक़ात हो या न हो, मौक़ा मिले या न मिले, इसलिए मैंने तुम्हारे बारे में कुछ कहा सुना हो, या तुम्हारी कोई ज़्यादती की हो, तो आज मैं तुम से उसकी माफ़ी मांगता हूं। इसलिए सफ़र में जाते हुए इसकी आ़दत डालनी चाहिए कि जिनसे मेल मुलाक़ात रहती हो उनसे यह जुम्ला कह देना चाहिए। जब वह सामने वाला जवाब में यह कह दे कि मैंने माफ़ कर दिया तो इन्शा अल्लाह माफ़ी हो जायेगी।

जिनका पता नहीं उनसे माफ़ी का तरीक़ा

माफ़ कराने का यह तरीक़ा तो हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन लोगों के बारे में बताया जिन तक रसाई और पहुंच हो सकती है। लेकिन बहुत से ताल्लुक़ात रखने वाले ऐसे होते हैं कि उन तक रसाई मुम्किन नहीं। जैसे हम लोग अक्सर बसों में, रेलों में, हवाई जहाज़ों में सफ़र करते हैं, और उन सफ़रों में न जाने कितने लोगों को हम से तक्लीफ़ पहुंच गई होगी। अब हमें न उनका नाम मालूम है और न ही उनका पता मालूम है। अब उन तक पहुंच कर उनसे माफ़ी मांगने का कोई रास्ता नहीं है, ऐसे लोगों से माफ़ी मांगने का भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक तरीक़ा बता दिया जो बहुत ही

आसान है।

उनके लिए यह दुआ करें

वह यह कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसे लोगों के हक़ में यह दुआ़ फ़रमा दी कि:

ايما مؤمن او مؤمنة اٰذيتهٗ او شتمتهٗ او جلدتهٗ اولعنتهٗ فا جعلها له صلاة وزكوٰة وقربة تقربه بها اليك۔

यानी ऐ अल्लाह! मेरी ज़ात से किसी मोमिन मर्द या औरत को कभी कोई तक्लीफ़ पहुंची हो, या मैंने कभी किसी को बुरा भला कहा हो, या मैंने कभी किसी को मारा हो, या कभी किसी को लानत की हो, या कभी उसके हक़ में बद–दुआ़ की हो, तो ऐ अल्लाह! मेरे उन सारे आमाल को उस शख़्स के हक़ में रहमत बना दीजिए और उसको उसके पाक होने का ज़रिया बना दीजिए और मेरे उस अ़मल के नतीजे में उसको अपना कुर्ब (निकटता) अ़ता फ़रमा दीजिए।

इसलिए बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जिन तक आप नहीं पहुंच सकते और जिनसे माफ़ी मांगने का कोई रास्ता नहीं है, उनके हक़ में यह दुआ़ कर दें। क्योंकि जब आपकी पहुंचाई हुई तक्लीफ़ उनके हक़ में रहमत बन जायेगी तो इन्शा अल्लाह वे ख़ुद ही माफ़ कर देंगे। और उनके हक़ में ईसाले सवाब करें। यानी उनको सवाब पहुंचाएं।

ज़िन्दा को सवाब पहुंचाना

बाज़ लोग यह समझते हैं कि ईसाले सवाब (सवाब

पहुंचाना) सिर्फ़ मुर्दों को हो सकता है जो दुनिया से जा चुके, ज़िन्दों को नहीं हो सकता। यह ख़्याल ग़लत है, ईसाले सवाब तो ज़िन्दा आदमी को भी किया जा सकता है। इसलिए इबादत करके, तिलावत करके उसका सवाब ऐसे लोगों को पहुंचा दो जिनको आपकी ज़ात से कभी तक्लीफ़ पहुंची हो, उसके नतीजे में तुमने उसके साथ जो ज़्यादती की है इन्शा अल्लाह उसकी तलाफ़ी हो जायेगी।

उमूमी दुआ कर लें

इसके अ़लावा एक उमूमी दुआ़ यह कर लो कि या अल्लाह! जिस जिस शख़्स को मुझ से तक्लीफ़ पहुंची हो, और जिस जिस शख़्स की मुझ से हक़ तल्फ़ी हुई हो, या अल्लाह! अपने फ़ज़्ल से उस पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाइए और मेरे इस अ़मल को उसके लिए रहमत का ज़रिया बना दीजिए और उसको मुझ से राज़ी कर दीजिए, और उसके दिल को मेरी तरफ़ से साफ़ कर दीजिए ताकि वह मुझे माफ़ कर दे।

एक ग़लत ख़्याल की तरदीद

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने एक वाज़ (तक़रीर) में यह दुआ़ वाली हदीस बयान फ़रमाने के बाद इर्शाद फ़रमाया कि इस से किसी को यह ख़्याल न हो कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बहुत से गुनाह करने वालों को लानत की है, जैसा कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम ने एक हदीस में फ़रमाया:

لَعَنَ اللّٰهُ الرَّاشِیَ وَالْمُرْتَشِیَ۔

अल्लाह तआ़ला रिश्वत लेने वाले और रिश्वत देने वाले पर लानत करे।

अब यह हदीस सुनकर रिश्वत देने वाला या लेने वाला इस ग़लत फ़हमी में मुब्तला न हो कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की यह लानत मेरे हक़ में दुआ़ बन जायेगी, इसलिए कि ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ फ़रमा दी है कि ऐ अल्लाह! मैंने जिस जिसको लानत की है वह लानत उसको दुआ़ बनकर लगे।

वजह इसकी यह है कि दुआ़ की हदीस के शुरू में ये अल्फ़ाज़ भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाए कि:

اِنما أنا بشر أغضب کما یغضب البشر۔

ऐ अल्लाह! मैं तो एक इन्सान हूं और जिस तरह और इन्सानों को ग़ुस्सा आ जाता है इसी तरह मुझे भी ग़ुस्सा आ जाता है। उस ग़ुस्से के नतीजे में अगर कभी मैंने किसी को कोई तक्लीफ़ पहुंचाई हो या लानत की हो या बुरा भला कहा हो तो उसको उसके हक़ में दुआ़ बनाकर लगाइए।

इसलिए यह हदीस उस लानत के बारे में है जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ग़ुस्से की हालत में बशरी तक़ाज़े से किसी पर लानत की हो, ऐसी लानत उसके हक़ में दुआ़ बनकर लगे। लेकिन अगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ने किसी शख़्स पर गुनाह की वजह से लानत की हो, या दीन और शरीअ़त के तक़ाज़े से लानत की हो, तो यह दुआ़ वाली हदीस उस लानत के बारे में नहीं है।

ख़ुलासा

बहर हाल! जिन लोगों के हुक़ूक़ ज़ाया किए हैं, और उनकी तलाफ़ी मुम्किन नहीं है तो अब उनके हक़ में दुआ़ करो। यह काम कोई मुश्किल नहीं है, बस एक बार बैठकर अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ मारूज़ कर लो कि या अल्लाह! पता नहीं कितने लोगों के हुक़ूक़ मुझ से बर्बाद हुए होंगे। ऐ अल्लाह! उन हक़ तल्फ़ियों को उनके हक़ में दुआ़ बना दीजिए और उनके लिए रहमत का ज़रिया बना दीजिए और उनके दिलों को मेरी तरफ़ से साफ़ फ़रमा दीजिए ताकि वे मुझे माफ़ कर दें।

इसलिए पिछले मामलों को साफ़ करने के लिए हर शख़्स ये दो काम ज़रूर कर ले जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत से साबित हैं, और बुज़ुर्गों का तरीक़ा रहे हैं। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से इन पर मुझे भी और आपको भी अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين